जै श्रीमन्नारायण!

श्रीश्रीश्री त्रीदंडि चिन्न जीयर् स्वामीजि का मंगळाशासन् से

तिरुप्पावै

జై శ్రీమన్నారాయణ !

పరమహంస పరివ్రాజకులు
శ్రీ.శ్రీ.శ్రీ. త్రిదండి శ్రీమన్నారాయణ రామానుజ జీయర్‌స్వామివారు

వేదాంతద్వయ తత్త్వజ్ఞం మంత్ర మంత్రార్థదం గురుమ్ ॥
శ్రీమన్నారాయణాచార్య రామానుజ యతిం భజే ॥

జై శ్రీమన్నారాయణ !

పరమహంస పరివ్రాజకులు
శ్రీ.శ్రీ.శ్రీ. త్రిదండి చిన్న శ్రీమన్నారాయణ రామానుజ జీయర్‌స్వామివారు

కాశ్యపాన్వయసంజాతం నారాయణ పదాశ్రితమ్ ।
శ్రీమన్నారాయణం వందే యతీశ్వర శ్రియాజుషమ్ ॥

श्री महा विष्णुव के चतुर्विंशति नामावळि

1. ओं केशवाय नमः
2. ओं नारायणाय नमः
3. ओं माधवाय नमः
4. ओं गोविन्दाय नमः
5. ओं विष्णवे नमः
6. ओं मधुसूदनाय नमः
7. ओं त्रिविक्रमाय नमः
8. ओं वामनाय नमः
9. ओं श्रीधराय नमः
10. ओं हृषीकेशाय नमः
11. ओं पद्मनाभाय नमः
12. ओं दामोदराय नमः
13. ओं संकर्षणाय नमः
14. ओं वासुदेवाय नमः
15. ओं प्रद्युम्नाय नमः
16. ओं अनिरुद्धाय नमः
17. ओं पुरुषोत्तमाय नमः
18. ओं अधोक्षजाय नमः
19. ओं नारसिंहाय नमः
20. ओं अच्युताय नमः
21. ओं जनार्दनाय नमः
22. ओं उपेंद्राय नमः
23. ओं हरये नमः
24. ओं श्री कृष्णाय नमः

श्री कृष्णाष्टोत्तर शतनामावळिः

ओं श्रीकृष्णाय नमः
ओं कमलानाथाय नमः
ओं वासुदेवाय नमः
ओं सनातनाय नमः
ओं वसुदेवात्मजाय नमः 5
ओं पुण्याय नमः
ओ लीलामानुष विग्रहाय नमः
ओं श्रीवत्स कौस्तुभ धराय नमः
ओं यशोदा वत्सलाय नमः
ओ हरये नमः 10
ओं चतुर्भुजात्तचक्रासि गदा शाङ्गदिउदायुधाय नमः
ओं देवकी नन्दनाय नमः
ओं श्रीशाय नमः
ओं नन्दगोप प्रियात्मजाय नमः
ओं यमुनावेग संहारिणे नमः 15
ओं बलभद्र प्रियानुजाय नमः
ओं पूतनाजीवित हराय नमः
ओं शकटासुर भंजनाय नमः
ओं नन्दव्रज जना नंदिने नमः
ओं सच्चिदानन्दविग्रहाय नमः 20
ओं नवनीत विलिप्तांगाय नमः
ओं नवनीत नटाय नमः
ओं अनघाय नमः
ओं नवनीत नवाहाराय नमः
ओं मुचिकुंद प्रसादकाय नमः 25
ओं षोडश स्त्री सहस्रेशाय नमः
ओं त्रिभंगिने नमः
ओं मधुराकृतये नमः
ओं शुकवागमृताब्धींदवे नमः
ओं गोविंदायनमः 30
ओं योगिनां पतये नमः
ओं वत्सवाट चराय नमः
ओं अनंताय नमः
ओं धेनुकासुर भंजनाय नमः
ओं तृणीकृत तृणावर्ताय नमः 35
ओं यमळार्जुन भञ्जनायनमः
ओं उत्तालताल भेत्त्रे नमः
ओं तमाल श्यामलाकृतये नमः
ओं गोप गोपीश्वराय नमः
ओं योगिने नमः 40
ओं कोटिसूर्य समप्रभाय नमः
ओं इलापतये नमः
ओं परंज्योतिषे नमः
ओं यादवेंद्राय नमः
ओं यदूद्वहाय नमः 45
ओं वनमालिने नमः
ओं पीतवाससे नमः
ओं पारिजातापहारकाय नमः
ओं गोवर्धनाचलोद्धर्त्रे नमः
ओं गोपालाय नमः 50
ओं सर्वपालकाय नमः
ओं अजाय नमः
ओं निरंजनाय नमः
ओं काम जनकाय नमः
ओं कंजलोचनाय नमः 55
ओं मधुघ्ने नमः
ओं मधुरा नाथाय नमः
ओं द्वारका नायकाय नमः
ओं बलिने नमः
ओं बृन्दावनांतसंचारिणे नमः 60
ओं तुलसीदाम भूषणाय नमः
ओं श्यमंतकमणे हर्त्रे नमः
ओं नर नारायणात्मकाय नमः
ओं कुब्जा कृष्टांबरधराय नमः
ओं मायिने नमः 65
ओं परमपूरुषाय नमः
ओं मुष्टिकासुर चाणूर मल्लयुद्ध विशारदाय नमः
ओं संसार वैरिणे नमः
ओं कंसारये नमः
ओं मुरारये नमः 70
ओं नरकांतकाय नमः
ओं अनादि ब्रह्मचारिणे नमः
ओं कृष्णाव्यसन कर्शकाय नमः
ओं शिशुपाल शिरश्छेत्त्रे नमः
ओं दुर्योधन कुलान्तकाय नमः 75
ओं विदुराक्रूर वरदाय नमः
ओं विश्वरूप प्रदर्शकाय नमः
ओं सत्यवाचे नमः
ओं सत्यसंकल्पाय नमः
ओं सत्यभामारताय नमः 80
ओं जयिने नमः
ओं सुभद्रा पूर्वजाय नमः

ओं विष्णवे नमः
ओं भीष्ममुक्ति प्रदायकाय नमः
ओं जगद्गुरवे नमः 85
ओं जगन्नाथाय नमः
ओं वेणुनाद विशारदाय नमः
ओं वृषभासुर विध्वंसिने नमः
ओं बाणासुर करांतकाय नमः
ओं युधिष्ठिरप्रतिष्ठात्रेनमः 90
ओं बर्हिबर्हावतंसकाय नमः
ओं पार्थसारथये नमः
ओं अव्यक्ताय नमः
ओं गीतामृत महोदधये नमः
ओं काळीय फणिमाणिक्य रंजित श्रीपदाम्बुजाय नमः95
ओं दामोदराय नमः
ओं यज्ञभोक्त्रे नमः
ओं दानवेन्द्र विनाशकाय नमः
ओं नारायणाय नमः
ओं परस्मैब्रह्मणे नमः 100
ओं पन्नगाशन वाहनाय नमः
ओं जलक्रीडासमासक्त गोपीवस्त्रापहारकाय नमः
ओं पुण्यश्लोकाय नमः
ओं तीर्थपादाय नमः
ओं वेदवेद्याय नमः 105
ओं दयानिधये नमः
ओं सर्वतीर्थात्मकाय नमः
ओं सर्वग्रहरूपिणे नमः
ओं परात्पराय नमः
ओं श्री कृष्ण परब्रह्मणे नमः

श्री गोदा अष्टोत्तर शतनामावळिः

ओं श्रीरंगनायक्यै नमः
ओं गोदायै नमः
ओं विष्णुचित्तात्मजायै नमः
ओं सत्यै नमः
ओं गोपीवेषधरायै नमः 5
ओं देव्यै नमः
ओं भूसुतायै नमः
ओं भोगशालिन्यै नमः
ओं तुलसीकाननोद्भूतायै नमः
ओं श्रियैनमः 10
ओं धन्विपुर वासिन्यै नमः
ओं भट्टनाथ प्रियकर्यै नमः
ओं श्रीकृष्ण हितभोगिन्यै नमः
ओं आमुक्त माल्यदायै नमः
ओं बालायै नमः 15
ओं रंगनाथ प्रियायै नमः
ओं परायै नमः
ओं विश्वंभरायै नमः
ओं कलालापायै नमः
ओं यतिराजसहोदर्यैनमः 20
ओं कृष्णानुरक्तायै नमः
ओं सुभगायै नमः
ओं सुलभ श्रियै नमः
ओं सलक्षणायै नमः
ओं लक्ष्मीप्रियसख्यैनमः 25
ओं श्यामायै नमः
ओं दयांचित दृगंचलायै नमः
ओं फल्गुन्याविर्भवायै नमः
ओं रम्यायै नमः
ओं धनुर्मासकृतव्रतायै नमः 30
ओं चंपकाशोक पुन्नाग मालती विलसत्कचायै नमः
ओं आकार त्रय संपन्नायै नमः
ओं नारायण समाश्रितायै नमः
ओं श्रीमदष्टाक्षरी मंत्रराज स्थित मनोरथायै नमः
ओं मोक्षप्रदाननिपुणायैनमः 35
ओं मंत्ररत्नाधिदेवतायै नमः
ओं ब्रह्मण्यायै नमः
ओं लोकजनन्यै नमः
ओं लीलामानुषरूपिण्यै नमः
ओं ब्रह्मज्ञायै नमः 40
ओं अनुग्रहायै नमः
ओं मायायै नमः
ओं सच्चिदानंद विग्रहायै नमः
ओं महा पतिव्रतायै नमः
ओं विष्णु गुणकीर्तन लोलुपायै नमः 45
ओं प्रपन्नार्तिहरायै नमः
ओं नित्यायै नमः
ओं वेदसौध विहारिण्यै नमः
ओं श्रीरंगनाथ माणिक्यमंजर्यै नमः
ओं मंजुभाषिण्यै नमः 50
ओं सुगंधार्थ ग्रंथकर्यै नमः
ओं रंगमंगळ दीपिकायै नमः
ओं ध्वज वज्रांकुशाब्जांक मृदु पादतलांचितायै नमः
ओं तारकाकारनखरायै नमः
ओं प्रवाळ मृदुलांगुळ्यै नमः 55
ओं कूर्मोपमेय पादोर्ध्वभागायै नमः
ओं शोभन पार्ष्णिकायै नमः
ओं वेदार्थभावविदित तत्त्वबोधांघ्रि पंकजायै नमः
ओं आनंदबुद्बुदाकार सुगुल्फायै नमः
ओं परमायै नमः 60
ओं अणुकायै नमः
ओं तेज श्श्रियोज्ज्वलधृत पादांगुळि सुभूषितायै नमः
ओं मीन केतनतूणीर चारुजंघा विराजितायै नमः
ओं ककुदत ज्जानुयुग्माढ्यायै नमः
ओं स्वर्ण रंभाभ सक्थिकायै नमः 65
ओं विशाल जघनायै नमः
ओं पीन सुश्रोण्यै नमः
ओं मणि मेखलायै नमः
ओं आनंद सागरावर्त गंभीरांभोज नाभिकायै नमः
ओं भास्वद्वळित्रिकायै नमः 70
ओं चारु जगत्पूर्ण महोदर्यै नमः
ओं ओं नवमल्ली रोमराज्यै नमः
ओं सुधाकुंभायित स्तन्यै नमः
ओं कल्पमाला निभ भुजायै नमः
ओं चंद्रखंड नखांचितायै नमः 75
ओं सुप्रवाळांगुळी न्यस्त महारत्नांगुळीयकायै नमः
ओं नवारुण प्रवाळाभ पाणिदेश समंचितायै नमः
ओं कंबुकंठ्यै नमः
ओं सुचुबुकायै नमः

ओं बिंबोष्ठ्यै नमः 80
ओं कुंददंत युजे नमः
ओं कारुण्यरस निष्यंदि नेत्रद्वय सुशोभितायै नमः
ओं मुक्ता शुचिस्मितायै नमः
ओं चारुचांपेय निभ नासिकायै नमः
ओं दर्पणाकार विपुल कपोल द्वितयांचितायै नमः 85
ओं अनंतार्क प्रकाशोद्यन्मणि ताटंक शोभितायै नमः
ओं कोटि सूर्याग्नि संकाश नानाभूषण भूषितायै नमः
ओं सुगंध वदनायै नमः
ओं सुभ्रुवे नमः
ओं अर्धचंद्र ललाटिकायै नमः 90
ओं पूर्ण चंद्राननायै नमः
ओं नीलकुटिलालक शोभितायै नमः
ओं सौंदर्य सीमायै नमः
ओं विलसत्कस्तूरी तिलकोज्ज्वलायै नमः
ओं धगद्धगायमानोद्यन्मणि सीमंत भूषणायै नमः 95
ओं जाज्ज्वल्यमान सद्रत्न दिव्य चूडावतंसकायै नमः
ओं सूर्यार्धचंद्र विलसद्भूषणांचित वेणिकायै नमः
ओं निगन्निगद्रत्नपुंज प्रांतस्वर्ण निचोळिकायै नमः
ओं सद्रत्नांचित विद्योत विद्युत्पुंजाभ शाटिकायै नमः
ओं अत्यर्कानल तेजोधि मणिकंचुक धारिण्यै नमः 100
ओं नानामणिगणाकीर्ण हेमांगद सुभूषितायै नमः
ओं कुंकुमागरु कस्तूरी दिव्यचंदन चर्चितायै नमः
ओं स्वोचितौज्ज्वल्य विविध विचित्र मणिहारिण्यै नमः
ओं असंख्येय सुखस्पर्श सर्वातिशय भूषणायै नमः
ओं मल्लिका पारिजातादि दिव्यपुष्प स्रगंचितायै नमः 105
ओं श्रीरंगनिलयायै नमः
ओं पूज्यायै नमः
ओ दिव्यदेश सुशोभितायै नमः
ओं श्रीरंगनायक्यै नमः
ओं श्री महालक्ष्म्यै नमः
ओं श्री देव्यै नमः
ओं श्री भूदेव्यै नमः
ओं श्री नीळादेव्यै नमः
ओं श्री गोदादेव्यै नमः
ओं श्री अनंताय नमः
ओं श्री गरुडाय नमः
ओं श्री परांकुशाय नमः
ओं श्रीमते रामानुजाय नमः
ओं श्रीमद्वरवरमुनये नमः
ओं स्वाचार्येभ्यो नमः
ओं पूर्वाचार्येभ्यो नमः
ओं श्रीरंगनायक्यै नमः
ओं समस्त परिवाराय सर्व दिव्य मंगळ विग्रहाय
श्रीमते नारायणाय नमः

मगळाशासनम□

स्वोच्छिष्टमालिकाबंध गंध बंधुर जिष्णवे ।
विष्णुचित्ततनूजायै गोदायै नित्यमंगळम□॥

माद्दशाकिंचन त्राण बद्धकंकण पाणये ।
विष्णुचित्त तनुजायै गोदायै नित्यमंगळम□॥

श्रीमत्यै विष्णुचित्तार्य मनोनंदन हेतवे ।
नंदनंदनसुंदर्यै गोदायै नित्यमंगळम□॥

कर्कटे पूर्वफल्गुन्यां तुलसीकाननोद्भवाम□।
पांड्ये विश्वंभरां गोदां वंदे श्रीरंगनायकीम□॥

मंगळाशासनपरैः मदाचार्य पुरोगमैः ।
सर्वैश्च पूर्वैराचार्यैः सत्कृतायास्तु मंगळम□॥

सेवाकालम□- गुरुपरंपरा

श्रीशैलेश दयापात्रं धीभक्त्यादि गुणार्णवम□
यतींद्रप्रवणंवंदे रम्यजामातरंमुनिम□॥
लक्ष्मीनाथ समारंभां नाथ यामुन मध्यमाम□
अस्मदाचार्य पर्यंतां वन्दे गुरु परंपराम□॥

यो नित्यमच्युत पदांबुज युग्म रुक्म
व्यामोहत स्तदितराणि तृणाय मेने ।
अस्मद्गुरोर्भगवतोस्य दयैकसिन्धोः
रामानुजस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥

माता पिता युवतय स्तनया विभूतिः
सर्वं यदेव नियमेन मदन्वयानाम□।
आद्यस्य नः कुलपते र्वकुळाभिरामं
श्रीमत्तदंघ्रि युगळं प्रणमामि मूर्ध्ना ॥

भूतं सरश्च महदाह्वय भट्टनाथ
श्री भक्तिसार कुलशेखर योगिवाहान□।
भक्तांघ्रि रेणु परकाल यतींद्र मिश्रान□
श्रीमत्परांकुशमुनिं प्रणतोस्मि नित्यम□॥

* तिरुप्पळ्ळियेषुच्चि *

श्रीरंगनाथ का सुप्रभात□

तिरुमालैयाण्डान□के व्दारा अनुगृहीत तनियन□

तमेव मत्वा परवासुदेवं
रङ्गेशयं राजवदर्हणीयम□।
प्राबोधकीं योकृत सूक्तिमालां
भक्ताङ्घ्रिरेणुं भगवन्त मीडे ॥

तिरुवरंग प्पेरुमाळरैयर□अनुगृहीत तनियन□

मण्डङ्गुडियेन्बर□मामरैयोर□मन्नियशीर□
तॊण्डरडिप्पॊडि तॊन्नगरं, वण्डु
तिणर्तवयल□तॆन्नरङ्गत्तम्मानै, पळ्ळि
युणर्तुं पिरान□उदित्त वूर□

* पाशुरम□- 1

कदिरवन□कुणदिशै च्चिगरं वन्दणैन्दान,□
कनै यिरु ळगन्ऱदु कालैयं पॊषुदाय,□
मदु विरिन्दॊषिगिन मामल रेल्लां,
वानव ररशर्गळ□वन्दु वन्दीण्डि
एदिरदिशै निरैन्दनर□इवरॊडुं पुगुन्द,
इरुङ्गळि त्तीट्टमुं पिडियॊडु मुरशुं,
अदिर□तलिल□अलैकडल□पोन्ऱुळदु एङ्गुं,
अरङ्गत्तम्मा! पळ्ळियेषुन्दरुळाये ॥

पाशुरम□- 2

कॊषुङ्गॊडि, मुल्लैयिन□कॊषुमल रणवि,
क्कूर□दु कुणदिशै मारुतं इदुवो,
ऐषुन्दन मलरणै प्पळ्ळिकॊळ्ळन्नं
ईन्बनि ननैन्द तमिरुं शिऱगुदऱि,
वि षुङ्गिय मुदलैयिन□पिलम्बुरै पेष्वाय□
वॆळ्ळॆयिऱु ऱवदन□विडत्तिनु क्कनुङ्गि
अषुङ्गिय वानैयिनरुन्दुयर□कॆडुत्त.
अरङ्गत्तम्मा! पळ्ळि येषुन्दरुळाये.

पाशुरम - 3

शुडरोळि परन्दन शूष्दिशै येल्लां,
तुन्निय तारकै मिन्नोळि शुरुङ्गि,
पडरोळि पशुत्तनन पनिमदि यिवनो,
पायिरुळगन्रदु पैम्बो षिक्कमुगिन,
मडलिडै क्कीरि वण्पाळैगळ नार,
वैकरै कूरदु मारुत मिदुवो,
अडलोळितिगष्तरु तिगिरियन्दडक्कै,
अरङ्गत्तम्मा! पळ्ळियॆषुन्दरुळाये.

पाशुरम - 4

मेट्टिळ मेदिगळ तळैविडुं आयरकुळ,
वेयकुष लोशैयुं विडै मणिक्कुरलुम,
ईट्टिय विशैदिशै परन्दन वयलुळ,
इरिन्दन शुरुम्बिनं इलंगैयर कुलत्तै,
वाट्टिय वरिशिलै वानव रेरे!
मामुनि वेळ्वियै क्कात्तु, अवपिरदं
आट्टिय वडुतिर लयोत्ति यॆम्मरशे!
अरङ्गत्तम्मा! पळ्ळियॆषुन्दरुळाये.

पाशुरम - 5

पुलम्बिन पुट्कळुं पूम्बोषिल गळिन याय
पोयित्तु क्कङ्गुल पुगुन्ददु पुलरि,
कलन्ददु कुणदिशै कनैकड लरवं,
कळिवण्डु मिषत्तिय कलम्बग म्बुनैन्द,
अलङ्गल न्दोडैयल कॊण्डु अडियिणै पणिवान,
अमरर्गळ पुगुन्दनर आदलिल अम्मा!
इलंगैयरकोन वषिपाडु शेय कोयिल,
एम्बेरुमान! पळ्ळियॆषुन्दरुळाये.

पाशुरम - 6

इरवियर मणिनेडुं तेरोडुं इवरो?
इरैयवर पदिनोरु विडैयरुमिवरो,
मरुविय मयिलिन नरुमुगन इवनो?
मरुदरुं वशुक्कळुं वन्दु वन्दीण्डि,
पुरवियो डाडलुं पाडलुं तेरुं,
कुमरदण्ड पुगुन्दीण्डिय वॆळ्ळम,
अरुवरै यनैयनिन कोयिल मुन्निवरो?
अरङ्गत्तम्मा! पळ्ळियॆषुन्दरुळाये.

पाशुरम - 7

अन्दर त्तमररगळ कूट्टङ्गल इवैयो?
अरुन्दव मुनिवरुं मरुदरुं इवरो?
इन्दिर नानैयुं तानुं वन्दिवनो?
एम्बेरुमान! उनकोयिलिन वाशल,
शुन्दरर नॆरुक्क विच्चादरर नूक्क
इयक्करुं मयङ्गिनर तिरुवडित्तोषुवान
अन्दरं पारिड मिल्लै मत्तिदुवो?
अरङ्गत्तम्मा! पळ्ळियॆषुन्दरुळाये.

पाशुरम - 8

वम्बविष वानवर वायुरै वषंग,
मानिदिकपिलै ऒण कण्णाडिमुदला,
एम्बेरुमान पडिमैक्कलं काण्डर्कु,
एरपनवायिन कॊण्डु नन्मुनिवर,
तुम्बुरु नारदर पुगुन्दन रिवरो
तोन्रिन निरवियुं तुलङ्गोळि परप्पि,
अम्बर तलत्तु निन्र गलगिनर दिरुळ पोय,
अरङ्गत्तम्मा! पळ्ळियॆषुन्दरुळाये.

पाशुरम - 9

एदमिल तण्डुमै एक्कं मत्तळि
याषकुषल मुषुवमोडु इशैदिशै केषुमि,
कीदङ्गळ पाडिनर किन्नरर करुडरगळ,
कन्दरुव रवर कङ्गुलु ळेल्लाम,
मादवर वानवर शारणर इयक्कर,
शित्तरुं मयङ्गिनर तिरुवडि तोषुवान
आदलिलवर्कु नाळोलक्कं अरुळ
आरङ्गत्तम्मा! पळ्ळियॆषुन्दरुळाये

पाशुरम - 10

कडिमलर कमलङ्गळ मलरन्दन इवैयो
कदिरवन कनैकडल मुळैत्तन निवनो
तुडि यिडैयार शुरिकुषल पिषिन्दुदरि
तुगिलुडु त्तेरिनर शूष्पुन लरङ्गा!
तॊडैयोत्त तुळवमुं कूडैयुं पोलिन्दु
तोन्रिय तोळ तॊण्डरडिप्पोडि येन्नुम
अडियनै अळिय नॆन्नरुळि उन्नडियार्काळ
पडुत्ताय! पळ्ळियॆषुन्दरुळाये.

तोंडरडिप्पोडियाळ्वार तिरुवडिगळे शरणम

~~~~~~~o~~~~~~~

तिरुप्पावै

तनियन

नीळातुंग स्तनगिरितटीसुप्तमुद्बोध्य कृष्णं,
पारार्थ्यं स्वं श्रुतिशतशिरस्सिद्ध मध्यापयन्ती ।
स्वोच्छिष्टायां स्रजि निगळितं या बलात्कृत्य भुङ्क्ते,
गोदा तस्यै नम इदमिदं भूय एवास्तु भूयः॥

अन्न वयल पुदुवै याण्डाळ अरंगर्कु
पन्नु तिरुप्पावै प्पल पदियम, इन्निशैयाल
पाडिक्कॊडुत्ताळ नर्पामालै, पूमालै
शूडिक्कॊडुत्ताळै च्चॊल्लु.
शूडिक्कॊडुत्त शुडर्कोडिये तोलपावै,
पाडियरुळवल्ल पल्वळैयाय! नाडि नी
वेंगडवर्केन्नै विदि येन्नर विम्मात्तम,
नां कडवा वण्णमे नलकु.

पाशुरम - 1

मार्गषित्तिंगल मदि निरैन्द नन्नाळाल,
नीराड प्पोदुवीर पोदुमिनो नेरिषैयीर
शीरमलगु मायपाडि शेल्वच्चिरुमीर काळ,
कूरवेल कॊडुन्दोषिलन नन्दगोपन कुमरन,
एरारन्दकण्णि यशोदै यिळं शिंगम,
कारमेनि च्चॆंगण कदिर मदियम्बोल मुगत्तान,
नारायणने नमक्के परै तरुवान
पारोर पुषप्पडिन्देलो रेम्बावाय

पाशुरम - 2

वैयत्तु वाष वीरकाळ नामुम नमपावैक्कु,
शेय्युम किरिशैगळ केळीरो, पार्कडलुळ
पैय त्तुयिन्र परम नडिपाडि,
नेय्युण्णोम पालुण्णोम नाट्काले नीराडि,
मैयिट्टेषुदोम मलरिट्टु नाममुडियोम
शेय्यादन शेय्योम तीक्कुरळै च्चॆन्रोदोम,
ऐयमुम पिच्चैयुं आन्दनैयुम कैकाट्टि ,
उय्युमारॆण्णि उगन्देलोरेम्बावाय

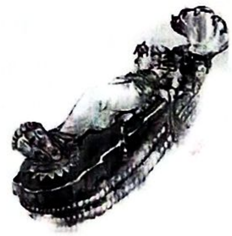
~~~~~~~

पाशुरम-3

ओंगि युलकळन्द उत्तमन पेरपाडि,
नांगळ नम्पावैक्कु च्चात्ति नीराडिनाल,
तींगिन्ऱि नाडेल्लाम तिंगळ मुम्मारि पेयदु,
ओंगु पेरुं शेन्नेलूडु कयलुगळ,
पूंगुवळैप्पोदिल प्पोरिवण्डु कण्पडुप्प,
तेंगादे पुक्किरिन्दु शीर्तमुलै पत्ति वांग,
कुडम निऱैक्कुम वळ्ळल पेरुम्बशुक्कळ,
नींगाद शेल्वम निऱैन्देलो रेम्बावाय

पाशुरम-4

आषिमषै क्कण्णा! ओन्ऱु नी कैकरवेल,
आषियुळ पुक्कु मुकन्दुकोडार्तेऱि,
ऊषिमुतल्व नुरुवम्बोल मेय करुत्तु,
पाषियेन्दोळुडै प्पर्पनाबन कैयिल
आषि पोल मिन्नि वलम्बुरिपोल निन्ऱदिरन्दु
ताषादे शारङ्ग मुदैत्त शरमषैपोल,
वाषवुलकिनिल पेयदिडाय, नांगळुम
मारकषि नीराड मकिषन्देलो रेम्बावाय

पाशुरम-5

मायनै मन्नु वडमदुरै मैन्दनै
तूय पेरुनीर यमुनै त्तुऱैवनै,
आयरकुलत्तिनिल तोन्ऱुम मणिविळक्कै
तायै क्कुडल विळक्कम शेयद दामोदरनै,
तूयोमाय वन्दु नाम तूमलर तूवित्तोडुदु,
वायिनाल पाडि मनत्तिनाल शिन्दिक्क,
पोय पिषैम पुगुतरुवा निन्ऱनवुम
तीयिनिल तूशागुम शेप्पेलो रेम्बावाय

पाशुरम-6

पुळ्ळुम शिलुम्बिनगाण पुळ्ळरैयिन कोयिलिल,
वेळ्ळै विळिशङ्गिन पेररवम केट्टिलैयो?,
पिळ्ळाय एषुंदिराय पेय मुलै नंजुंडु,
कळ्ळच्चगडम कलक्कषिय क्कालोच्चि,
वेळ्ळत्तरविल तुयिलमरन्द वित्तिनै,
उळ्ळत्तुक्कोंडु मुनिवरगळुम योगिगळुम,
मेळ्ळवेषुन्दु अरियेन्ऱ पेररवम,
उळ्ळम पुगुन्दु कुळिरन्देलो रेम्बावाय

पाशुरम-7

कीशुकीशे न्ऱेंगुं आनैच्चात्तन, कलन्दु
पेशिन पेच्चरवम केट्टिलैयो पेय प्पेण्णे!
काशुम पिऱप्पुम कलगलप्प कैपेर्तु,
वाश नऱुं कुषलायिच्चियर मत्तिनाल
ओशैप्पडुत्त तयिररवम केट्टिलैयो,
नायग प्पेण्बिळ्ळाय नारायणन मूर्ति! ,
केशवनै प्पाडवुम नी केट्टे किडत्तियो,
तेशमुडैयाय तिरवेलो रेम्बावाय

पाशुरम-8

कीष्वानम वेळ्ळेन्ऱु एरुमै शिऱुवीडु,
मेयवान परन्दनकाण मिक्कुळ्ळ पिळ्ळैगळुम,
पोवान पोगिन्ऱारै प्पोगामल कात्तु, उन्नै
क्कूवुवान वंदु निन्ऱोम, कोदुकलमुडैय
पावाय एषुन्दिराय पाडिप्पऱै कोंडु
मावाय पिळन्दानै मल्लरै माट्टिय,
देवादिदेवनै शेन्ऱु नां शेवित्ताल,
आवावेन्ऱारायन्दरुळेलो रेम्बावाय

पाशुरम-9

तूमणिमाडत्तु च्चुत्तुम विळक्केरिय,
तूपम कमष त्तुयिलणै मेल कण्वळरुम,
मामानमकळे! मणिक्कदवम ताळ तिऱवाय,
मामीर अवळै येषुप्पीरो, उनमगळ दान
ऊमैयो? अन्ऱि च्चेविडो, अनन्दलो
एम प्पेरुन्दुयिल मन्दिरप्पट्टाळो
मामायन मादवन वैगुन्दन एन्ऱेन्ऱु,
नामम पलवुम नविनरेलो रेम्बावाय

पाशुरम-10

नोत्तु च्चुवरक्कम पुगुगिन्ऱ अम्मनाय
मात्तमुम तारारो वाशल तिऱवादार
नात्त त्तुषायमुडि नारायणन, नम्माल
पोत्त प्पऱै तरुम पुण्णियनाल, पण्डोरुनाळ
कूत्तत्तिन वायवीष्न्द कुम्बकरणनुम,
तोत्तु मुनक्के पेरुन्दुयिल तान तन्दानो,
आत्त वनन्दलुडैयाय अरुंगलमे!
तेत्तमाय वन्दु तिऱवेलो रेम्बावाय

पाशुरम-11

कत्तुक्कऱवै क्कणंगळ पलकऱन्दु,
शेत्तार तिरलषिय च्चेन्ऱु शेरुच्चेय्युम,
कुत्त मोन्ऱिल्लाद कोवलरतम पोर्कोडिये!
पुत्तरवलगुल पुनमयिले! पोदराय,
शुत्तत्तु त्तोषिमारेल्लारुम वन्दु, निन
मुत्तम पुकुन्दु मुकिल वण्णन पेरपाड,
शित्तादे पेशादे शेल्व प्पेंडाट्टि, नी!
एत्तुक्कुऱंगुम पोरुळेलो रेम्बावाय

पाशुरम-12

कनैत्तिळं कत्तेरुमै कन्ऱुक्किरंगि,
निनैत्तु मुलैवषिये निन्ऱुपाल शोर,
ननैत्तिल्लम शेऱाक्कुम नर्चेल्वन तंगाय
पनि त्तलैवीष निन वाशल कडैपत्ति,
शिनत्तिनाल तेन्निलंगै क्कोमानै च्चेत्त,
मनत्तुक्किनियानै प्पाडवुम नीवाय तिरवाय,
इनित्ता नेषुन्दिराय ईदेन्न पेरुरक्कम,
अनैत्तिल्लत्तारु मरिन्देलो रेम्बावाय

पाशुरम-13

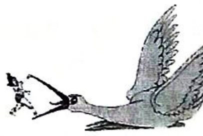

पुळ्ळिन वाय कीण्डानै प्पोल्लावरक्कनै,
क्किळ्ळि क्कळैन्दानै क्कीर्तिमै पाडिप्पोय,
पिळ्ळैक ळेल्लारुम पावैक्कळम पुक्कार,
वेळ्ळियेषुन्दु वियाष मुऱंगित्तु,
पुळ्ळुम शिलुम्बिनकाण पोदरिक्कण्णिनाय,
कुळ्ळक्कुळिर क्कुडैन्दु नीराडादे,
पळ्ळिक्किडत्तियो पावाय नी नन्नाळाल,
कळ्ळम तविरन्दु कलन्देलो रेम्बावाय

पाशुरम-14

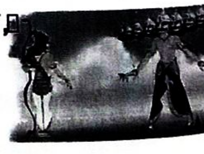

उङ्गळ पुषैक्कडै त्तोट्टत्तु वावियुळ
शेङ्गषुनीर वाय नेगिषिंदु आम्पल वाय कूम्बिनकाण
शेंगल पोडिक्कूऱै वेण्बल तवत्तवर,
तंगळ तिरुक्कोयिल शंगिडुवान पोगिन्ऱार,
एगळै मुन्नम एषुप्पुवान वायपेशुम,
नंगाय एषुन्दिराय नाणादाय नावुडैयाय
शंगोडु शक्कर मेन्दुम तडक्कैयन,
पंगयक्कण्णानै प्पाडेलो रेम्बावाय

पाशुरम 15

एल्ले!इळंकिळिये!इन्न मुरंगुदियो,
शिल्लॆ न्नषैयेन्मिन □ंगैमीर□ पोदरुगिन्ऱेन,□
वल्लै उन□ट्टुरैगळ □ंडे युन □ायरिदुम,□
वल्लीर□ळ □ींगळे नानेदा नायिडुग,
ऒल्लै नी पोदाय!□उन्नक्कॆन्न वेऱुडैयै,
एल्लारुम □ोन्दारो?पोन्दार □ोन्दॆण्णिक्कॊळ,□
वल्लानै कॊन्ऱानै मात्तारै मात्तषिक्क
वल्लानै, मायनै प्पाडेलो रॆम्बावाय□

पाशुरम 16

नायगनाय □निन्ऱ नन्दगोपनुडैय
कोयिल □ाप्पाने!, कॊडित्तोन्ऱुम □ोरण
वाशल □ाप्पाने!, मणिक्कदवम □ाळ□तिऱवाय,□
आयर □शिऱुमियरोमुक्कु, अऱैपऱै
मायन □णिवण्णन □ॆन्नले वाय□र□दान,□
तूयोमाय □न्दोम □ुयिलॆष प्पाडुवान,□
वायाल □ुन्न मुन्नम □ात्तादे अम्मा!,नी
नेश निलैक्कदवम □ीक्केलो रॆम्बावाय□

पाशुरम 17

अम्बरमे! तण्णीरे! शोऱे! अऱमशॆय्युम,□
एम्बॆरुमान□नन्दगोपाला! एषुन्दिराय,□
कॊम्बनाक्केल्लाम □ॊषुन्दे! कुलविळक्के!
एम्बॆरुमाट्टि! यशोदा! अऱिवुऱाय,□
अम्बर मूडऱुत्तु ओंगि उलगळन्द,
उम्बर □ोमाने! उऱंगा दॆडषुंदिराय□
शॆम □ॊर्कषलडि च्चॆल्वा! बलदेवा!
उम्बियुम □ीयु मुरंगेलो रॆम्बावाय□

पाशुरम 18

उन्दु मदगळित्त नोडाद तोळ्वलियन,□
नन्दगोपालन □रुमगळे! नप्पिन्नाय□
कन्दम □मषुम □ुषली! कडैतिऱवाय,□
वन्दु एंगुम □ोषि अषैत्तनकाण□,□मादवि
प्पन्दल□ेल □ल□ाल □ुयिलिनंगळ □ूविनकाण,□
पन्दार□रलि! उन□त्तुनन □ेर□ाड,
शॆन्दामरै क्कैयाल □ीरार □ळै यॊळिप्प
वन्दु तिऱवाय □कि षिन्देलो रॆम्बावाय□

पाशुरम 19

कुत्तु विळक्कॆरिय क्कोट्टुक्काल □ट्टिल □ेल,□
मॆत्तन्न पञ्चशयनत्तिन □ेलेऱि,
कॊत्तलर □ूंकुषल □प्पिन्नै कॊंगैमेल,□
वैत्तु क्किडन्द मलर□ार□ा! वाय□िऱवाय,□
मैत्तडंकण्णिनाय□नी युन □णाळनै,
एत्तनैपोदुम □ुयिलॆषवॊट्टाय□ाण□,
एत्तनै येलुम □िरिवात्त किल्लायाल,□
तत्तुवमन्ऱु तगवेलो रॆम्बावाय□

पाशुरम 20

मुप्पत्तु मूव रमरर्कु मुनशॆन्ऱु,
कप्पम □विर्कुम □लिये! तुयिलॆषा य,□
शॆप्प मुडैयाय□तिऱलुडैयाय□ शॆत्तार्कु
वॆप्पं कॊडुक्कुम □िमला! तुयिलॆषाय,□
शॆप्पॆन्न मॆन□ुलै शॆव्वाय □िरुमरुंगुल,□
नप्पिन्नै नंगाय□तिरुवे! तुयिलॆषाय,□
उक्कमुम □ट्टॊळियुम □न्दुन□णाळनै,
इप्पोदे यॆम्मै नीराट्टेलो रॆम्बावाय□

पाशुरम 21

एत्त कलंगळ □ॆदिर□ॊंगि मीदळिप्प,
मात्तादे पाल □ॊरियुम □ळ्ळल □ॆरुं पशुक्कळ,□
आत्तप्पडैतान □गने! अऱिवुऱाय,□
ऊत्त मुडैयाय□पॆरियाय□उलगिनिल□
तोत्तमाय □िन्ऱ शुडरे!तुयिलॆषाय,□
मात्तारुनक्कु वलि तॊलैंदु उन □ाशर्कण,□
आत्तादुवन्दु उन्नडि पणियुमापोले,
पोत्तियाम □न्दोम □ुकषिन्देलो रॆम्बावाय□

पाशुरम 22

अंगण □ाञाल त्तरशर,□ अभिमान
बङ्गमाय □न्दु निन □ळ्ळिक्कट्टिल □ीषे,
शंग मिरुप्पार□ोल □न्दु तलै प्पॆय□ोम,□
किंगिणि वाय□चॆय□ तामरै प्पूप्पोले,
शॆंगण □शिरिच्चिरिदे यॆम्मेल □िषियावो,
तिंगळु मादित्तियनु मॆषुन्दार्पोल,□
अंग णिऱण्डुं कॊंडु एंगळ □ेल □ोक्कुदियेल,□
एंगळ □ेल □ाप मिषन्देलो रॆम्बावाय□

पाशुरम 23

मारि मलै मुषञ्जिल □न्नि क्किडन्दुऱंगुम□
शीरियशिंगमऱिवित्तु त्तीविषित्तु,
वेरिमयिर □ॊंग वॆप्पाडुम □ेर□दुदऱि,
मूरि निमिर□दु मुषंगि प्पुरप्पट्टु,
पोदरुमापोले नी पूवैप्पूवण्णा, उन□
कोयिल □निन्ऱु इंगने पोन्दरुळि,क्कोप्पुडैय
शीरिय शिंगासनत्तिरुन्दु, याम □न्द
कारिय माराय □न्दरुळेलो रॆम्बावाय□

पाशुरम 24

अन्ऱु इव्वुलग मळन्दाय□अडि पोत्ति,
शॆन्ऱंगु तॆन्निलंगै शॆत्ताय□तिऱल □ोत्ति,
पॊन्ऱ च्चगड मुतैत्ताय□पुकष्पोत्ति,
कन्ऱु कुणिला वॆरिंदाय□कषल □ोत्ति,
कुन्ऱु, कुडैया वॆडुत्ताय□गुणम □ोत्ति,
वॆन्ऱु पगै कॆडुक्कुम □िन□यिल □ेल □ोत्ति,
एन्ऱॆन्ऱुन □ेवगमे येत्ति प्पऱै कॊळ्वान,□
इन्ऱु याम □न्दों इऱंगेलो रॆम्बावाय□

पाशुरम 25

ऒरुत्ति मगनाय □िऱन्दु, ओरिरविल□
ऒरुत्तिमगनाय □ॊळित्तु वळर,
तरिक्किलानागि त्तान □ीङ्गु निनैन्द,
करुत्तै प्पिषैप्पित्तु कञ्जन □यित्तिल,□
नॆरुप्पॆन्ननिन्ऱ नॆडुमाले!, उन्नै
अरुत्तित्तु वन्दोम □ऱै तरुदियागिल,□
तिरुत्तक्क शॆल्वमुम □ेवगमुम □ांपाडि,
वरुत्तमुम □ीर□दु मकिषिन्देलो रॆम्बावाय□

पाशुरम 26

माले! मणिवण्णा! मार्गषि नीराडुवान,□
मेलैयार □ॊय□नकळ □ेंडुवन केट्टियेल,□
ञालत्तैयॆल्लाम □डुंग मुऱल्वन,
पालण्ण वण्णत्तु उन □ाञ्चशन्नियमे,
पोल्वन शंगंगळ □ोय□ाडुडै यनवे,
शालप्पॆरुम □ऱैये पल्लां डिशैप्पारे,
कोलविळक्के कॊडिये वितानमे,
आलिनिलैयाय□अरुळेलो रॆम्बावाय□

* पाशुरम-▯27

कूडारै वेल्लुम ▯शीर ▯गोविन्दा!, उंदन्नै
प्पाडि परैकोण्डु यामपे▯रु शम्मानम,▯
नाडु पुक षुम ▯परिशिनाल ▯नन्राग,
शूडगमे तोळ▯वळैये तोडे शेविप्पूवे,
पाडगमे येन्रनैय पल▯कलनुम ▯यामणिवोम,▯
आडैयुडुप्पोम ▯अदन▯पिन्ने पाल ▯शोरु
मूड नेय ▯पेयदु मुषंगै वषिवार,
कूडियिरुन्दु कुळिर▯देलो रेम्बावाम.▯

* पाशुरम-▯28

करवैगळ▯पिन ▯शेन्रु कानं शेर▯दुण्बोम ▯
अरिवोन्रु मिल्लाद वाय▯कुलत्तु, उन्दन्नै
पिरवि पेरुन्दनै पुण्णियुम ▯यामुडै योम,▯
कुरै वोन्रुमिल्लाद गोविन्दा,! उन्दन्नोडु
उरवेल ▯नमक्कु इंगोषिक्क वोषियादु,
अरियाद पिळ्ळैगळों अन्बिनाल,▯ उन्दन्नै
शिरु पेषैत्तनवुम ▯शीरि यरुळादे,
इरैवा नी ताराय ▯परै येलो रेम्बावाय.▯

नैवेद्यम ▯

दो पाशुरम ▯शान्ति पाठ आर▯शातुमुरै मंगळाशाशनान्तर▯ प▯ना है

मङ्गलाशासनम ▯

लक्ष्मीचरण लाक्षांक साक्षि श्रीवत्सवक्षसे ।
क्षेमं कराय सर्वेषां श्रीरंगेशाय मंगळम ▯॥

श्रियः कांताय कळ्याण निधये निथयेर्थिनाम ▯।
श्री वेंकट निवासाय श्रीनिवासाय मंगळम ▯॥

अस्तु श्रीस्तन कस्तूरी वासना वासितोरसे ।
श्रीहस्तिगिरि नाथाय देवराजाय मंगळम ▯॥

कमला कुच कस्तूरी कर्द मांकित वक्षसे ।
यादवाद्रि निवासाय संपत ▯पुत्राय मंगळम ▯॥

नीलाचल निवासाय नित्याय परमात्मने ।
सुभद्रा प्राणनाथाय श्री जगन्नाथाय मंगळम ▯॥

स्वोच्छिष्ट मालिका बंध गंधबंधुर जिष्णवे ।
विष्णुचित्त तनूजायै गोदायै नित्यमंगळम ▯॥

श्रीनगर्यां महापुर्यां ताम्र पर्ण्युत्तरे तटे ।
श्री तिंत्रिणी मूलधाम्ने शठकोपाय मंगळम ▯॥

शेषो वा सैन्यनाथो वा श्रीपति र्वेति सात्विकैः ।
वितर्क्याय महाप्राज्ञैः भाष्यकाराय मंगळम ▯॥

तुला मूलावतीर्णाय तोषिताखिल सूरये।
सौम्यजामातृ मुनये शेषांशायास्तु मंगळम ▯॥

मंगळाशासनपरैः मदाचार्य पुरोगमैः ।
सर्वेश्च पूर्वे राचार्यैः सत्कृतायास्तु मंगळम ▯॥

*पाशुरम-▯29

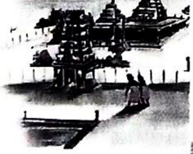

शित्तं शिरुकाले वंदुन्नै च्चेवित्तु, उन▯
पोत्तामरै यडिये पोत्तु पोरुळ ▯केळाय,▯
पेत्तं मेय▯गुण्णं कुलत्तिल ▯पिरंदु, नी
कुत्तेवल ▯एंगळै क्कोळ्ळामल ▯पोगादु,
इत्तै परैकोळ्वा नन्रुगाण ▯गोविंदा! ,
एत्तैक्कुं एषेष ▯पिरविक्कुं, उंदन्नोडु
उत्तोमे यावों उनक्के ना आट्चेय▯वों,
मत्तैनं कामंगळ ▯मात्तेलो रेम्बावाय.▯

* पाशुरम-▯30

वंगक्कडल ▯कडैंद मादवनै केशवनै,
तिंगळ▯तिरुमुगत्तु च्चेयिषैयार ▯शेन्रिरैंजि
अंगपरै▯ कोंड वात्तै, अणिपुदुवै
पैंगमल तण ▯तेरियल ▯पट्टर▯पिरान ▯कोदै शोन्न,

शंग त्तमिड्मालै मुप्पदुं तप्पामे,
इंगु इप्परिशुरैप्पार ▯ईरिरंडु माल्वरैत्तोळ,▯
शेंगण ▯तिरुमुगत्तु च्चेल्व तिरुमालाल,▯
एंगुंतिरुवरुळ्पेत्तु इंबुरुवरेम्बावाय.▯

तीर्थप्रसाद विनियोग ▯

कोदैपिरन्दवूर ▯गोविन्दन ▯वाडुमूर,▯
शोदिमणिमाडं तोन्रु मूर,▯ - नीदियाल ▯
नल्लपत्तर ▯वाडुमूर,▯ नान्मरैगळोदुमूर,▯
विल्लिपूत्तू वेंद क्कोनूर,▯
पातकङ्गळ ▯तीर्कुं परमनडि काट्टुं,
वेदमनैत्तुक्कुं वित्तागुं, - कोदै तमिड्
ऐयैन्दु मैन्दुं अरियाद मानिडरै,
वैयं शुमप्पदुं वम्बु।
तिरुवाडि प्पूरत्तिल ▯शेगतुदित्ताळ ▯वाडिये,
तिरुप्पावै मुप्पदुं शेप्पिनाळ ▯वाडिये,
पेरियाळ्वार ▯पेत्तेडुत्त पेण्पिळ्ळै वाडिये,
पेरुम्बूदूर ▯मामुनिक्कु प्पिन्नानाळ ▯वाडिये,
ओरुनूत्तु नार्पत्तु मून्रुरैत्ताळ ▯वाडिये,
उयर रङ्गर्के कण्णि युगन्दळित्ताळ ▯वाडिये,
मरुवारुं तिरुमल्लि वळनाडु वाडिये,
वण▯पुदुवैनगर ▯कोदै मलर ▯पदङ्गळ ▯वाडिये,

सर्वदेशदशाकालेषु अव्याहतपराक्रमा।
रामानुजार्यदिव्याज्ञा वर्धतामभिवर्धताम ▯॥

रामानुजार्यदिव्याज्ञा प्रतिवासरमुज्वला।
दिगंतव्यापिनीभूयात ▯सा हि लोकहितैषिणी॥

श्रीमन ▯श्रीरंग श्रियं अनुपद्रवां अनुदिनंसंवर्धय।
श्रीमन ▯श्रीरंग श्रियं अनुपद्रवां अनुदिनंसंवर्धय॥

नमश्श्रीशैल नाथाय कुंतीनगरजन्मने।
प्रसाद लब्ध परम प्राप्य कैंकर्यशालिने॥

श्रीशैलेशदयापात्रं धीभक्त्यादि गुणार्णवम ▯
यतींद्रप्रवणं वंदे रम्यजामातरंमुनिम ▯॥

वाडितिरुवाय्मोडिप्पिळ्ळै, मादगवाल्वाडुम,▯
मणवाळमामुनिवन ▯मीडियवन,▯
मारन ▯तिरुवाय ▯मोडिप्पोरुळै मानिलत्तोर ▯
तेरुम्बडि युरैक्कुं शीर,▯
शेय्यतामरै त्ताळिणै वाडिये,
शेलैवळि तिरुनाबि वाडिये,
तुय्यमार्बं पुरिनूलुं वाडिये,
सुंदर तिरुत्तोळिणै वाडिये,
कैयुं एंदिय मुक्कोलुं वाडिये,
करुणै पोंगिय कण्णिणै वाडिये,
पोय्यिलाद मणवाळ मामुनि
पुंदिवाडि पुगड् वाडि वाडिये,
अडियार्गळ ▯वाळ,▯ अरंगनगर ▯वाळ,▯
शठकोपन ▯तण ▯तमिड्नूल ▯वाळ,▯
कडल ▯शूडन्द मन्नुलगं वाळ,▯
मणवाळमामुनिये इन्नु मोरु नूत्तांडिरुम ▯॥
श्रीमते रम्यजामातृ मुनींद्राय महात्मने।
श्रीरंगवासिने भूयात ▯नित्यश्रीः नित्यमंगळम ▯॥
समस्त परिवाराय सर्वदिव्यमंगळविग्रहाय
श्रीमतेनारायणायनमः

गोदा चतुःश्लोकी

नित्या भूषा निगमशिरसां निस्समोतुंगवार्ता
कांतो यस्याः कचविलुलितैः कामुको माल्यरत्नैः ।
सूक्त्या यस्याः श्रुति सुभगया सुप्रभाता धरित्री
सैषा देवी सकलजननी सिंचतां मा मपांगैः ॥ 1

माता चेतुलसी पिता यदि तव श्रीविष्णुचित्तो महान□
भ्राता चे यतिरेखरः प्रियतमः श्रीरंगधामा यदि।
ज्ञातारस्तनयाः त्वदुक्ति सरस स्तन्येन संवर्धिताः
गोदादेवि! कथं त्व मन्यसुलभा साधारणा श्रीरसि ॥ 2

कल्पादौ हरिणा स्वयं जनहितं दृष्टेन सर्वात्मनां
प्रोक्तं स्वस्य च कीर्तनं प्रपदनं स्वस्मै प्रसूनार्पणम□।
सर्वेषां प्रकटं विधातु मनिशं श्रीधन्विनव्ये पुरे
जातां वैदिकविष्णुचित्त तनयां गोदा मुदारां स्तुमः ॥ 3

आकूतस्य परिष्क्रिया मनुपमा मासेचनं चक्षुषोः
आनंदस्य परंपरा मनुगुणा माराम शैलेशितुः ।
त द्दोर्मध्य किरीटकोटिघटित स्वोच्छिष्टकस्तूरिका
माल्यामोदसमेधितात्म विभवां गोदा मुदारां स्तुमः ॥ 4

श्रीरङ्गनाथस्तोत्रम□

श्रीपराशरभट्टार्यः श्रीरङ्गेश पुरोहितः ।
श्रीवत्साङ्कसुतः श्रीमान□श्रेयसे मेस्तु भूयसे ॥

सप्तप्राकारमध्ये सरसिज मुकुळोद्भासमाने विमाने
कावेरीमध्यदेशे मृदुतरफणिराट् भोग पर्यङ्कभागे।
निद्रामुद्राभिरामं कटिनिकट शिरः पार्श्वविन्यस्तहस्तं
पद्माधात्रीकराभ्यां परिचितचरणं रङ्गराजं भजेहम□॥ 1

कस्तूरी कलितोर्ध्वपुण्ड्रतिलकं कर्णान्त लोलेक्षणं
मुग्ध स्मेर मनोहराधरदळं मुक्ताकिरीटोज्ज्वलम□
पश्यन्मानस पश्यतोहररुचेः! पर्यायपङ्केरुहं
श्रीरङ्गाधिपतेः कदानु वदनं सेवेय भूयोप्यहम□॥ 2

कदाहं कावेरीतटपरिसरे रङ्गनगरे
शयानं भोगीन्द्रे शतमखमणि श्यामलरुचिम□।
उपासीनः क्रोशन□मधुमथन! नारायण! हरे!
मुरारे! गोविन्दे त्यनिश मनुनेष्यामि दिवसान□॥ 3
कदाहं कावेरी विमलसलिले वीतकलुषो
भवेयं तत्तीरे श्रममुषि वसेयं घनवने।
कदा वा तं पुण्ये महति पुळिने मङ्गळगुणं
भजेयं रङ्गेशं कमलनयनं शेषशयनम□॥ 4

पूगी कण्ठद्वयस सरसस्निग्ध नीरोपकण्ठां
आविर्मोद स्तिमितशकुनानूदित ब्रह्मघोषाम□।
मार्गेमार्गे पथिकनिवहै रुञ्छ्यमानापवर्गां
पश्येयं तां पुनरपि पुरीं श्रीमतीं रंगधाम्नः॥ 5

न जातु पीतामृत मूर्छितानां
नाकौकसां नन्दनवाटिकासु ।
रङ्गेश्वर! त्वत्पुर माश्रितानां
रथ्याशुना मन्यतमो भवेयम□॥ 6

असन्निकृष्टस्य निकृष्टजन्तोः
मिथ्यापवादेन करोषि शान्तिम□।
ततो निकृष्टे मयि सन्निकृष्टे
कां निष्कृतिं रङ्गपते! करोषि॥ 7

श्रीरङ्गं करिशैल मञ्जनगिरिं तार्क्ष्याद्रि सिंहाचलौ
श्रीकूर्मं पुरुषोत्तमं च बदरीनारायणं नैमिशम□।
श्रीम द्वारवती प्रयाग मधुरायोध्या गया पुष्कर
सालग्रामगिरिं निषेव्य रमते रामानुजोयं मुनिः ॥ 8

श्रीपराशरभट्टार्यः श्रीरङ्गेशपुरोहितः ।
श्रीवत्साङ्कसुतः श्रीमान□श्रेयसे मेस्तु भूयसे ॥

इति श्रीरङ्गनाथस्तोत्र

क्षमाप्रार्थन

मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन।
यत्कृतं तु मयादेव! परिपूर्णं तदस्तु ते॥

उपचारापदेशेन कृतानहरहर्मया।
अपचारानिमान□सर्वान□क्षमस्व पुरुषोत्तम!॥

स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्तां
न्याय्येन मार्गेण महीं महीशाः।
गोब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं
लोकास्समस्तास्सुखिनो भवन्तु॥

कालेवर्षतुपर्जन्यः पृथिवी सस्यशालिनी।
देशोयं क्षोभरहितः ब्राह्मणास्सन्तुनिर्भयाः॥

कावेरी वर्धतां काले काले वर्षतु वासवः।
श्रीरंगनाथो जयतु श्रीरंगश्रीश्च वर्धताम□॥

कायेन वाचा मनसेंद्रियैर्वा
बुद्ध्यात्मना वा प्रकृते स्स्वभावात□
करोमि यद्यत□सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि॥
श्रीमन्नारायणायेति समर्पयामि॥

पारायणप्रारंभः

श्रीशैलेशदयापात्रं धीभक्त्यादि गुणार्णवम्,
यतींद्रप्रवणं वंदे रम्यजामातरं मुनिम् ।।
लक्ष्मीनाथ समारंभां नाथ यामुन मध्यमाम्,
अस्मदाचार्य पर्यंतां वन्दे गुरुपरंपराम् ।।
यो नित्यमच्युत पदांबुज युग्मरुक्म-
व्यामोहत स्तदितराणि तृणाय मेने ।
अस्मद्गुरोर्भगवतोऽस्य दयैकसिन्धोः
रामानुजस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ।।
मातापिता युवतयस्तनया विभूतिः
सर्वं यदेव नियमेन मदन्वयानाम् ।
आद्यस्य नः कुलपतेर्वकुळाभिरामं
श्रीमत्तदंघ्रियुगळं प्रणमामि मूर्ध्ना ।।
भूतं सरश्च महदाह्वय भट्टनाथ
श्रीभक्तिसार कुलशेखर योगिवाहान् ।
भक्तांघ्रिरेणु परकाल यतींद्र मिश्रान्
श्रीमत्परांकुशमुनिं प्रणतोऽस्मि नित्यम् ।।

ओं भगवन्नारायणाभिमतानुरूप स्वरूप, रूप,
गुण विभव, ऐश्वर्य शीलादि अनवधिकातिशय,
असंख्येय कल्याण गुणगणां, पद्म वनालयां,
भगवतीं, श्रियं, देवीं नित्यानपायिनीं, निरवद्यां,
देवदेवदिव्यमहिषीं, अखिलजगन्मातरं, अस्मन्मातरं,
अशरण्यशरण्यां, अनन्यशरणः, शरणमहं प्रपद्ये।

श्री लक्ष्मी अष्टोत्तरशत नाम स्तोत्रम्

ध्यानम्

वन्दे पद्मकरां प्रसन्नवदनां सौभाग्यदां भाग्यदां।
हस्ताभ्यां अभयप्रदां मणिगणैर्नानाविधैर्भूषिताम्।।

भक्ताभीष्ट फलप्रदां हरिहर ब्रह्मादिभिस्सेवितां ।
पार्श्वे पंकज शंखपद्मनिधिभिर्युक्तां सदा शक्तिभिः।।

सरसिजनयने सरोजहस्ते धवळतरांशुक गंधमाल्यशोभे।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे
त्रिभुवन भूतिकरि ! प्रसीद मह्यम्।।

प्रकृतिं विकृतिं विद्यां सर्वभूत हितप्रदां ।
श्रद्धां विभूतिं सुरभिं नमामि परमात्मिकाम् ।। १

वाचं पद्मालयां पद्मां शुचिं स्वाहां स्वधां सुधां ।
धन्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं नित्यपुष्टां विभावरीम् ।। २

अदितिं च दितिं दीप्तां वसुधां वसुधारिणीं ।
नमामि कमलां कान्तां क्षमां क्षीरोद संभवाम् ।। ३

अनुग्रह परां ऋद्धिं अनघां हरि वल्लभाम्।
अशोकाममृतां दीप्तां लोकशोक विनाशिनीम् ।। ४

नमामि धर्मनिलयां करुणां लोक मातरम् ।
पद्मप्रियां पद्महस्तां पद्माक्षीं पद्मसुन्दरीम् ।। ५

पद्मोद्भवां पद्ममुखीं पद्मनाभ प्रियां रमाम् ।
पद्ममालाधरां देवीं पद्मिनीं पद्मगंधिनीम् ।। ६

पुण्यगंधां सुप्रसन्नां प्रसादाभिमुखीं प्रभाम् ।
नमामि चन्द्रवदनां चन्द्रां चन्द्रसहोदरीम् ।। ७

चतुर्भुजां चन्द्ररूपां इंदिरां इंदु शीतलां ।
आह्लाद जननीं पुष्टिं शिवां शिवकरीं सतीम् ।। ८

विमलां विश्वजननीं तुष्टिं दारिद्र्यनाशिनीं ।
प्रीतिपुष्करिणीं शांतां शुक्ल माल्याम्बरां श्रियम् ।।९

भास्करीं बिल्वनिलयां वरारोहां यशस्विनीं ।
वसुंधरां उदारांगां हरिणीं हेममालिनीम् ।। १०

धनधान्यकरीं सिद्धिं स्त्रैणसौम्यां शुभप्रदाम्।
नृपवेश्म गतानंदां वरलक्ष्मीं वसुप्रदाम् ।। ११

शुभां हिरण्यप्राकारां समुद्रतनयां जयाम् ।
नमामि मंगळां देवीं विष्णुवक्षस्स्थल स्थिताम् ।।१२

विष्णुपत्नीं प्रसन्नाक्षीं नारायण समाश्रिताम् ।
दारिद्र्यध्वंसिनीं देवीं सर्वोपद्रववारिणीम् ।। १३

नवदुर्गां महाकाळीं ब्रह्मविष्णु शिवात्मिकां ।
त्रिकालज्ञान संपन्नां नमामि भुवनेश्वरीम् ।। १४

लक्ष्मीं क्षीर समुद्रराज तनयां श्रीरंगधामेश्वरीं
दासीभूत समस्त देव वनितां लोकैक दीपांकुराम् ।
श्रीमन्मंद कटाक्षलब्दविभव ब्रह्मेंद्र गंगाधरां
त्वां त्रैलोक्य कुटुंबिनीं सरसिजां वन्दे मुकुन्दप्रियाम्।।

मातर्नमामि कमले ! कमलायताक्षि !
श्रीविष्णुहृत्कमलवासिनि ! विश्वमातः !
क्षीरोदजे कमल कोमल गर्भगौरि !
लक्ष्मि ! प्रसीद सततं नमतां शरण्ये ।।

इति श्रीलक्ष्म्यष्टोत्तर शतनामस्तोत्रं संपूर्णम् ।।

--*

श्रीविष्णु सहस्रनाम स्तोत्रम्

पूर्व पीठिका

शुक्लांबरधरं विष्णुं
शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्न वदनं ध्यायेत्
सर्व विघ्नोपशान्तये ।। १

यस्य द्विरदवक्त्राद्याः
पारिषद्याः परश्शतम् ।
विघ्नं निघ्नन्ति सततं
विष्वक्सेनं तमाश्रये ।। २

व्यासं वसिष्ठनप्तारं
शक्तेः पौत्रमकल्मषम् ।
पराशरात्मजं वंदे
शुकतातं तपोनिधिम् ।। ३

व्यासाय विष्णुरूपाय
व्यासरूपाय विष्णवे ।
नमो वै ब्रह्मनिधये
वाशिष्ठाय नमो नमः ।। ४

अविकाराय शुद्धाय
नित्याय परमात्मने ।
सदैकरूप रूपाय
विष्णवे सर्वजिष्णवे ।। ५

यस्य स्मरणमात्रेण
जन्मसंसार बन्धनात् ।
विमुच्यते नमस्तस्मै
विष्णवे प्रभविष्णवे ।। ६

ओं नमो विष्णवे प्रभविष्णवे

श्रीवैशंपायन उवाच -

श्रुत्वा धर्मा नशेषेण
पावनानि च सर्वशः ।
युधिष्ठिरश्शान्तनवं
पुनरेवाभ्यभाषत ।। ७

युधिष्ठिर उवाच -

कि मेकं दैवतं लोके
किं वाऽप्येकं परायणं ।
स्तुवन्तः कं कमर्चन्तः
प्राप्नुयुर्मानवाश्शुभम् ।। ८

को धर्मस्सर्वधर्माणां
भवतः परमो मतः ।
किं जपन् मुच्यते जन्तुः
जन्म संसारबंधनात् ।। ९

श्री भीष्म उवाच -

जगत्प्रभुं देवदेवं
अनन्तं पुरुषोत्तमम् ।
स्तुवन्नामसहस्रेण
पुरुषस्सततोत्थितः ।। १०

तमेव चार्चयन्नित्यं
भक्त्या पुरषमव्ययम् ।
ध्यायन् स्तुवन् नमस्यंश्च
यजमान स्तमेव च ।। ११

अनादि निधनं विष्णुं
सर्वलोक महेश्वरं ।
लोकाध्यक्षं स्तुवन्नित्यं
सर्वदुखातिगो भवेत् ।। २२

ब्रह्मण्यं सर्वधर्मज्ञं
लोकानां कीर्तिवर्धनम् ।
लोकनाथं महद्भूतं
सर्वभूतभवोद्भवम् ।। १३

एष मे सर्वधर्माणां
धर्मोऽधिकतमो मतः ।
यद्भक्त्या पुण्डरीकाक्षं
स्तवैरर्चेन्नरस्सदा ।। १४

परमं यो महत्तेजः
परमं यो महत्तपः ।
परमं यो महद्ब्रह्म
परमं यः परायणम् ।। १५

पवित्राणां पवित्रं यो
मंगळानां च मंगळम् ।
दैवतं देवतानां च
भूतानां योऽव्ययः पिता ।।१६

यतस्सर्वाणि भूतानि
भवन्त्यादि युगागमे ।
यस्मिंश्च प्रळयं यान्ति
पुनरेव युगक्षये ।। १७
तस्य लोकप्रधानस्य
जगन्नाथस्य भूपते ।
विष्णोर्नामसहस्रं मे
शृणु पापभयापहम् ।। १८

यानि नामानि गौणानि
विख्यातानि महात्मनः ।
ऋषिभिः परिगीतानि
तानि वक्ष्यामि भूतये ।। १९

विष्णो र्नामसहस्रस्य
वेदव्यासो महानृषिः ।
छन्दोऽनुष्टुप् तथा देवः
भगवान् देवकीसुतः ।। २०

अमृतांशूद्भवो बीजं
शक्तिर्देवकिनंदनः ।
त्रिसामा हृदयं तस्य
शान्त्यर्थे विनियुज्यते ।। २१

विष्णुं जिष्णुं महाविष्णुं
प्रभविष्णुं महेश्वरं ।
अनेकरूपदैत्यान्तं
नमामि पुरुषोत्तमम् ।। २२

न्यासः

अस्य श्रीविष्णोर्दिव्य सहस्रनाम स्तोत्र महामन्त्रस्य, श्री वेदव्यासो भगवान् ऋषिः,अनुष्टुप्छन्दः, श्री महाविष्णुः परमात्मा श्रीमन्नारायणो देवता, अमृतां शूद्भवो भानुरिति बीजं, देवकी नंदनस्स्रष्टेति शक्तिः, उद्भवः क्षोभणो देव इति परमो मंत्रः, शंखभृन्नन्दकी चक्रीति कीलकं, शार्ङ्गधन्वा गदाधर इत्यस्त्रं, रथांगपाणि रक्षोभ्य इति नेत्रं, त्रिसामा सामग स्सामेति कवचं, आनंदं परब्रह्मेति योनिः, ऋतुस्सुदर्शनः काल इति दिग्बन्धः, श्री विश्वरूप इति ध्यानं, श्री महाविष्णु कैंकर्यरूपे श्री सहस्रनाम जपे विनियोगः.

ध्यानम्

क्षीरोदन्वत्प्रदेशे शुचिमणि विलसत् सैकते मौक्तिकानां
मालाक्लप्तासनस्थः स्फटिकमणि निभमौक्तिकैर्मण्डितांगः ।
शुभ्रैरभ्रैरदभ्रैरुपरि विरचितर्मुक्तपीयूषवर्षैः
आनन्दी नः पुनीयात् अरिनळिन गदा शंखपाणिर्मुकुंदः ।। २४
भूः पादौ यस्य नाभिर्वियदसुरनिलश्चंद्रसूर्यौ च नेत्रे
कर्णावाशाशिशिरो द्यौर्मुखमपि दहनो,
यस्य वास्तेयमब्धिः ।अन्तस्थं यस्य विश्वं सुरनर
खगगो भोगि गन्धर्व दैत्यैः
।चित्रं रंरम्यते तं त्रिभुवन वपुषं विष्णुमीशं नमामि ।। २५

शांताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाकारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगम् ।
लक्ष्मीकांतं कमलनयनं योगिहृद्ध्यानगम्यं
वंदे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैक नाथम्।। २६

मेघश्यामं पीतकौसेयवासं
श्रीवत्सांकं कौस्तुभोद्भासितांगम्।
पुण्योपेतं पुण्डरीकायताक्षं
विष्णुं वन्दे सर्वलोकैकनाथम्।। २७

सशंखचक्रं सकिरीटकुण्डलं
सपीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणम् ।
सहारवक्षस्स्थलशोभिकौस्तुभं
नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम्।। २८

रिः ओम्

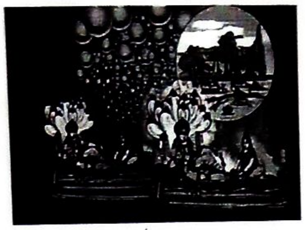

विश्वं विष्णुर्वषट्कारो
भूतभव्यभवत्प्रभुः ।
भूतकृद् भूतभृद्भावो
भूतात्मा भूतभावनः ।।

पूतात्मा परमात्मा च
मुक्तानां परमागतिः ।
अव्ययः पुरुषस्साक्षी
क्षेत्रज्ञोऽक्षर एव च ।। २

योगो योगविदां नेता
प्रधान पुरुषेश्वरः ।
नारसिंहवपश्श्रीमान्
केशवः पुरुषोत्तमः ।। ३

सर्व शर्वश्शिवः स्थाणुः
भूतादि र्निधिरव्ययः ।
संभवो भावनो भर्ता
प्रभवः प्रभुरीश्वरः ।। ४

स्वयम्भूश्शम्भुरादित्यः
पुष्कराक्षो महास्वनः ।
अनादि निधनो धाता
विधाता धातुरुत्तमः ।। ५

अप्रमेयो हृषीकेशः
पद्मनाभोऽमरप्रभुः ।
विश्वकर्मा मनुस्त्वष्टा
स्थविष्ठस् स्थविरो ध्रुवः ।। ६

अग्राह्यश्शाश्वतः कृष्णो
लोहिताक्षः प्रतर्दनः ।
प्रभूत स्त्रिककुब्धाम
पवित्रं मंगळं परम् ।। ७

ईशानः प्राणदः प्राणो
ज्येष्ठः श्रेष्ठः प्रजापतिः ।
हिरण्यगर्भो भूगर्भो
माधवो मधुसूदनः ।। ८

ईश्वरो विक्रमी धन्वी
मेधावी विक्रमः क्रमः ।
अनुत्तमो दुराधर्षः
कृतज्ञः कृतिरात्मवान् ।। ९

सुरेशश्शरणं शर्म
विश्वरेताः प्रजाभवः ।
अहस्संवत्सरो व्याळः
प्रत्ययस्सर्वदर्शनः ।। १०

अजस्सर्वेश्वर स्सिद्धः
सिद्धिस्सर्वादिरच्युतः ।
वृषाकपि रमेयात्मा
सर्वयोग विनिस्सृतः ।। ११

वसुर्वसुमनास्सत्यः
समात्मा सम्मित स्समः ।
अमोघः पुण्डरीकाक्षो
वृषकर्मा वृषाकृतिः ।। १२

रुद्रो बहुशिरा बभ्रुः
विश्वयोनि श्शुचिश्रवाः ।
अमृतश्शाश्वतस्स्थाणुः
वरारोहो महातपाः ।। १३

सर्वग स्सर्वविद्भानुः
विष्वक्सेनो जनार्दनः ।
वेदो वेदविदव्यंगो
वेदांगो वेदवित्कविः ।। १४

लोकाध्यक्षस्सुराध्यक्षो
धर्माध्यक्षः कृताकृतः ।
चतुरात्मा चतुर्व्यूहः
चतुर्दंष्ट्रश्चतुर्भुजः ।। १५

भ्राजिष्णु र्भोजनं भोक्ता
सहिष्णुर्जगदादिजः ।
अनघो विजयो जेता
विश्वयोनिः पुनर्वसुः ।। १६

उपेन्द्रो वामनः प्रांशुः
अमोघश्शुचिरूर्जितः ।
अतीन्द्र स्संग्रह स्सर्गो
धृतात्मा नियमो यमः ।। १७

वेद्यो वैद्यस्सदा योगी
वीरहा माधवो मधुः ।
अतीन्द्रियो महामायो
महोत्साहो महाबलः ।। १८

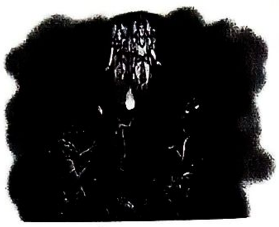

महाबुद्धिर्महावीर्यो
महाशक्तिर्महाद्युतिः ।
अनिर्देश्यवपुः श्रीमान्
अमेयात्मा महाद्रिधृत् ।। १९

महेष्वासो महीभर्ता
श्रीनिवासः सतांगतिः ।
अनिरुद्धः सुरानन्दो
गोविन्दो गोविदां पतिः ।। २०

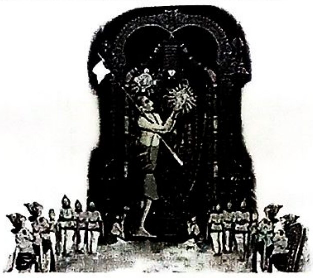

मरीचिर्दमनो हंसः
सुपर्णो भुजगोत्तमः ।
हिरण्यनाभः सुतपाः
पद्मनाभः प्रजापतिः ।। २१

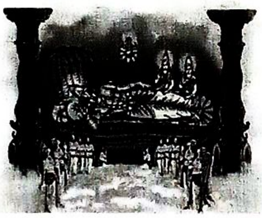

अमृत्युः सर्वदृक्सिंहः
सन्धाता संधिमान् स्थिरः ।
अजो दुर्मर्षणः शास्ता
विश्रुतात्मा सुरारिहा ।। २२

गुरुर्गुरुतमो धाम
सत्यः सत्य पराक्रमः ।
निमिषोऽनिमिषः स्रग्वी
वाचस्पति रुदारधीः ।। २३

अग्रणीर्ग्रामणीः श्रीमान्
न्यायो नेता समीरणः ।
सहस्रमूर्धा विश्वात्मा
सहस्राक्षः सहस्रपात् ।। २४

आवर्तनो निवृत्तात्मा
संवृतः संप्रमर्दनः ।
अहः संवर्तको वह्निः
अनिलो धरणीधरः ।। २५

सुप्रसादः प्रसन्नात्मा
विश्वसृड् विश्वभुग्विभुः ।
सत्कर्ता सत्कृतः साधुः
जह्नुर्नारायणो नरः ।। २६

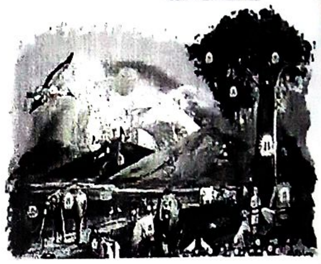

असंख्येयोऽप्रमेयात्मा
विशिष्ट शिष्टकृच्छुचिः।
सिद्धार्थः सिद्धसङ्कल्पः
सिद्धिद स्सिद्धिसाधनः ।। २७

वृषाही वृषभो विष्णुः
वृषपर्वा वृषोदरः ।
वर्धनो वर्धमानश्च
विविक्त श्श्रुतिसागरः ।। २८

सुभुजो दुर्धरो वाग्मी
महेन्द्रो वसुदो वसुः ।
नैकरूपो बृहद्रूपः
शिपिविष्टः प्रकाशनः ।। २९

ओजस्तेजो द्युतिधरः
प्रकाशात्मा प्रतापनः ।
ऋद्धः स्पष्टाक्षरो मंत्रः
चन्द्रांशुर्भास्करद्युतिः ।। ३०

अमृतांशूद्भवो भानुः
शशबिंदुः सुरेश्वरः ।
औषधं जगत स्सेतुः
सत्यधर्म पराक्रमः ।। ३१

भूतभव्य भवन्नाथः
पवनः पावनोऽनलः ।
कामहा कामकृत्कान्तः
कामः कामप्रदः प्रभुः ।। ३२

युगादिकृद्युगावर्तो
नैकमायो महाशनः ।
अदृश्योऽव्यक्तरूपश्च
सहस्रजिदनंतजित् ।। ३३

इष्टो विशिष्टः शिष्टेष्टः
शिखण्डी नहुषो वृषः ।
क्रोधहा क्रोधकृत्कर्ता
विश्वबाहुर्महीधरः ।। ३४

अच्युतः प्रथितः प्राणः
प्राणदो वासनानुजः ।
अपांनिधि रधिष्ठानं
अप्रमत्तः प्रतिष्ठितः ।। ३५

स्कंदः स्कंदधरो धुर्यो
वरदो वायुवाहनः ।
वासुदेवो बृहद्भानुः
आदिदेवः पुरन्दरः ।। ३६

अशोक स्तारण स्तारः
शूरः शौरि र्जनेश्वरः ।
अनुकूलः शतावर्तः
पद्मी पद्म निभेक्षणः ।। ३७

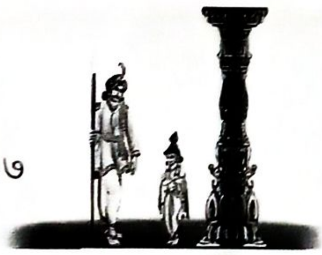

पद्मनाभोऽरविन्दाक्षः
पद्मगर्भः शरीरभृत् ।
महर्धिः ऋद्धो वृद्धात्मा
महाक्षो गरुडध्वजः ।। ३८

अतुलः शरभो भीमः
समयज्ञो हविर्हरिः ।
सर्व लक्षण लक्षण्यो
लक्ष्मीवान् समितिंजयः ।। ३९

वक्षरो रोहितो मार्गो
तुर्दामोदरः सहः ।
हीधरो महाभागो
गवानमिताशनः ।। ४०

उद्भवः क्षोभणो देवः
श्रीगर्भः परमेश्वरः ।
करणं कारणं कर्ता
विकर्ता गहनो गुहः ।। ४१

व्यवसायो व्यवस्थानः
संस्थानः स्थानदो ध्रुवः।
परर्धिः परमस्पष्टः
तुष्टः पुष्टः शुभेक्षणः ।। ४२

रामो विरामो विरजो
मार्गो नेयो नयो नयः ।
वीरः शक्तिमतां श्रेष्ठो
धर्मो धर्मविदुत्तमः ।। ४३

वैकुण्ठः पुरुषः प्राणः
प्राणदः प्रणवः पृथुः ।
हिरण्यगर्भः शत्रुघ्नो
व्याप्तो वायुरधोक्षजः ।। ४४

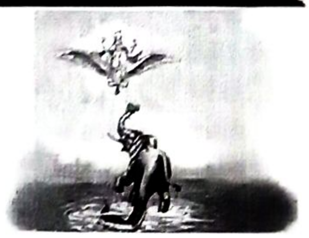

ऋतुः सुदर्शनः कालः
परमेष्ठी परिग्रहः ।
उग्रः संवत्सरो दक्षो
विश्रामो विश्वदक्षिणः ।। ४५

विस्तारः स्थावरः स्थाणुः
प्रमाणं बीजमव्ययम्।
अर्थोऽनर्थो महाकोशो
महाभोगो महाधनः ।। ४६

अनिर्विण्णः स्थविष्ठो भूः
धर्मयूपो महामखः ।
नक्षत्रनेमिर्नक्षत्री
क्षमः क्षामः समीहनः ।। ४७

यज्ञ इज्यो महेज्यश्च
क्रतुः सत्रं सतांगतिः ।
सर्वदर्शी निवृत्तात्मा
सर्वज्ञो ज्ञान मुत्तमम् ।। ४८

सुव्रतः सुमुखः सूक्ष्मः
सुघोषः सुखदस्सुहृत् ।
मनोहरो जितक्रोधो
वीरबाहुर्विदारणः ।। ४९

स्वापनः स्ववशो व्यापी
नैकात्मा नैककर्मकृत् ।
वत्सरो वत्सलो वत्सी
रत्नगर्भो धनेश्वरः ।। ५०

धर्मगुब्धर्मकृद्धर्मी
सदक्षरम् असत् क्षरम् ।
अविज्ञाता सहस्रांशुः
विधाता कृतलक्षणः ।। ५१

गभस्तिनेमिः सत्त्वस्थः
सिंहो भूतमहेश्वरः ।
आदिदेवो महादेवो
देवेशो देवभृद्गुरुः ।। ५२

उत्तरो गोपतिर्गोप्ता
ज्ञानगम्यः पुरातनः
शरीरभूतभृद्भोक्ता
कपीन्द्रो भूरिदक्षिणः ।। ५३

सोमपोऽमृतपः सोमः
पुरुजित्पुरुसत्तमः ।
विनयो जयः सत्यसन्धो
दाशार्हः सात्वतांपतिः ।। ५४

जीवो विनयिता साक्षी
मुकुन्दोऽमितविक्रमः
अम्भोनिधिरनन्तात्मा
महोदधिशयोऽन्तकः ।। ५५

अजो महार्हः स्वाभाव्यो
जितामित्रः प्रमोदनः ।
आनन्दो नन्दनो नन्दः
सत्यधर्मा त्रिविक्रमः ।। ५६

महर्षिः कपिलाचार्यः
कृतज्ञो मेदिनीपतिः ।
त्रिपदस्त्रिदशाध्यक्षः
महाश्रृंगः कृतांतकृत् ।। ५७

महावराहो गोविंदः
सुषेणः कनकांगदी।
गुह्यो गभीरो गहनो
गुप्तश्चक्र गदाधरः ।। ५८

वेधास्स्वांगोऽजितः कृष्णो
दृढः संकर्षणोऽच्युतः ।
वरुणो वारुणो वृक्षः
पुष्कराक्षो महामनाः ।। ५९

भगवान् भगहानन्दी
वनमाली हलायुधः ।
आदित्यो ज्योतिरादित्यः
सहिष्णुर्गतिसत्तमः ।। ६०

सुधन्वा खण्डपरशुः
दारुणो द्रविण प्रदः ।
दिविस्पृक्सर्वदृग्व्यासो
वाचस्पति रयोनिजः ।। ६१

त्रिसामा सामगः साम
निर्वाणं भेषजं भिषक् ।
सन्यासकृच्छमः शांतो
निष्ठा शान्तिः परायणः।। ६२

शुभांगः शान्तिदः स्रष्टा
कुमुदः कुवलेशयः ।
गोहितो गोपतिर्गोप्ता
वृषभाक्षो वृषप्रियः ।। ६३

अनिवर्ती निवृत्तात्मा
संक्षेप्ता क्षेमकृच्छिवः ।
श्रीवत्सवक्षाः श्रीवासः
श्रीपतिः श्रीमतां वरः ।। ६४

श्रीदः श्रीशः श्रीनिवासः
श्रीनिधिः श्रीविभावनः ।
श्रीधरः श्रीकरः श्रेयः
श्रीमान् लोकत्रयाश्रयः ।। ६५

स्वक्षः स्वंगः शतानंदो
नंदिर्ज्योति र्गणेश्वरः ।
विजितात्मा विधेयात्मा
सत्कीर्तिश्छिन्न संशयः।। ६६

उदीर्णः सर्वतश्चक्षुः
अनीशः शाश्वतः स्थिरः ।
भूशयो भूषणो भूतिः
विशोकः शोकनाशनः ।। ६७

अर्चिष्मानर्चितः कुंभो
विशुद्धात्मा विशोधनः ।
अनिरुद्धोऽप्रतिरथः
प्रद्युम्नोऽमितविक्रमः ।। ६८

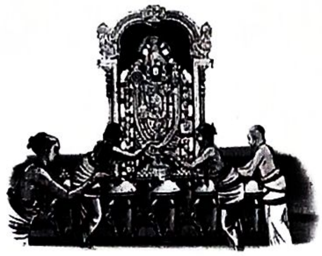

कालनेमिनिहा शौरिः
शूरः शूरजनेश्वरः ।
त्रिलोकात्मा त्रिलोकेशः
केशवः केशिहा हरिः ।। ६९

कामदेवः कामपालः
कामी कांतः कृतागमः ।
अनिर्देश्यवपुः विष्णुः
वीरोऽनंतो धनंजयः ।। ७०

ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृत् ब्रह्मा
ब्रह्म ब्रह्मविवर्धनः ।
ब्रह्मविद् ब्राह्मणो ब्रह्मी
ब्रह्मज्ञो ब्राह्मणप्रियः ।। ७१

महाक्रमो महाकर्मा
महातेजा महोरगः ।
महाक्रतुर्महायज्वा
महायज्ञो महाहविः ।। ७२

स्तव्यः स्तवप्रियः स्तोत्रं
स्तुतः स्तोतारणप्रियः ।
पूर्णः पूरयिता पुण्यः
पुण्यकीर्ति रनामयः ।। ७३

मनोजव स्तीर्थकरो
वसुरेता वसुप्रदः ।
वसुप्रदो वासुदेवो
वसुर्वसुमना हविः ।। ७४

सद्गतिः सत्कृतिः सत्ता
सद्भूतिः सत्परायणः ।
शूरसेनो यदुश्रेष्ठः
सन्निवासः सुयामुनः ।। ७५

भूतावासो वासुदेवः
सर्वासुनिलयोऽनलः ।
दर्पहा दर्पदो दृप्तो
दुर्धरोऽथापराजितः ।। ७६

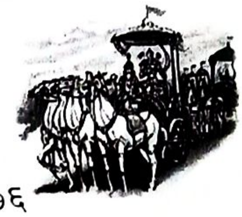

विश्वमूर्तिर्महामूर्तिः
दीप्तमूर्ति रमूर्तिमान् ।
अनेकमूर्तिरव्यक्तः
शतमूर्तिः शताननः ।। ७७

एको नैकः स वः कः किं
यत्तत्पद मनुत्तमम्।
लोकबंधुर्लोकनाथो
माधवो भक्तवत्सलः ।। ७८

सुवर्णवर्णो हेमांगो
वरांगश्चन्दनांगदी ।
वीरहा विषमः शून्यो
घृताशी रचल श्चलः ।। ७

अमानी मानदो मान्यो
लोकस्वामी त्रिलोकधृत् ।
सुमेधा मेधजो धन्यः
सत्यमेधा धराधरः ।। ८०

तेजो वृषो द्युतिधरः
सर्वशस्त्रभृतां वरः ।
प्रग्रहो निग्रहो व्यग्रो
नैकशृंगो गदाग्रजः ।। ८१

चतुर्मूर्ति श्चतुर्बाहुः
चतुर्व्यूहः चतुर्गतिः ।
चतुरात्मा चतुर्भावः
चतुर्वेदविदेकपात् ।। ८२

समावर्तो निवृत्तात्मा
दुर्जयो दुरतिक्रमः ।
दुर्लभो दुर्गमो दुर्गो
दुरावासो दुरारिहा ।। ८३

शुभांगो लोकसारंगः
सुतन्तु स्तन्तुवर्धनः ।
इन्द्रकर्मा महाकर्मा
कृतकर्मा कृतागमः ।। ८४

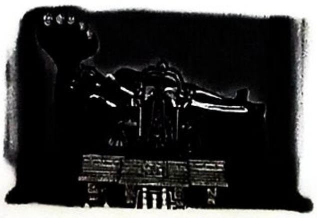

उद्भव स्सुंदर स्सुन्दो
रत्ननाभ स्सुलोचनः ।
अर्को वाजसनिः शृंगी
जयन्तः सर्वविज्जयी ।। ८५

सुवर्ण बिंदुरक्षोभ्यः
सर्ववागीश्वरेश्वरः ।
महाह्रदो महागर्तो
महाभूतो महानिधिः ।। ८६

कुमुदः कुन्दरः कुंदः
पर्जन्यः पावनोऽनिलः ।
अमृताशोऽमृतवपुः
सर्वज्ञः सर्वतोमुखः ।। ८७

सुलभः सुव्रतः सिद्धः
शत्रुजिच्छत्रुतापनः ।
न्यग्रोधोदुम्बरोऽश्वत्थः
चाणूरान्ध्र निषूदनः ।। ८८

सहस्रार्चिः सप्तजिह्वः
सप्तैधाः सप्तवाहनः ।
अमूर्तिरनघोऽचिंत्यो
भयकृद् भयनाशनः ।। ८९

अणु बृहत्कृशः स्थूलो
गुणभृन्निर्गुणो महान् ।
अधृतः स्वधृतः स्वास्थ्यः
प्राग्वंशो वंश वर्धनः ।। ९०

भारभृत् कथितो योगी
योगीश स्सर्वकामदः ।
आश्रमः श्रमणः क्षामः
सुपर्णो वायुवाहनः ।। ९१

धनुर्धरो धनुर्वेदो दण्डो
दमयिताऽदमः ।
अपराजितः सर्वसहो
नियंता नियमो यमः ।। ९२

सत्त्ववान् सात्विकः
सत्यः सत्यधर्म परायणः ।
अभिप्रायः प्रियार्होर्हः
प्रियकृत् प्रीतिवर्धनः ।। ९३

विहायसगति ज्योतिः
सुरुचिर्हुतभुग्विभुः ।
रविर्विरोचनः सूर्यः
सविता रविलोचनः ।। ९४

अनंत हुतभुग्भोक्ता
सुखदो नैकदोऽग्रजः ।
अनिर्विण्णः सदामर्षी
लोकाधिष्ठानमद्भुतः ।। ९५

सनात् सनातनतमः
कपिलः कपिरव्ययः
स्वस्तिदः स्वस्तिकृत् स्वस्ति
स्वस्तिभुक् स्वस्तिदक्षिणः ।।९६

अरौद्रः कुण्डली चक्री
विक्रम्यूर्जित शासनः ।
शब्दातिगः शब्दसहः
शिशिरः शर्वरीकरः ।। ९७

अक्रूरः पेशलो दक्षो
दक्षिणः क्षमिणां वरः ।
विद्वत्तमो वीतभयः
पुण्यश्रवणकीर्तनः ।। ९८

उत्तारणो दुष्कृतिहा
पुण्यो दुःस्वप्न नाशनः ।
वीरहा रक्षण स्सन्तो
जीवनः पर्यवस्थितः ।। ९९

अनंत रूपोऽनंत श्रीः
जितमन्युर्भयापहः ।
चतुरश्रो गभीरात्मा
विदिशो व्यादिशो दिशः ।।१००

अनादि र्भूर्भुवो लक्ष्मीः
सुवीरो रुचिरांगदः ।
जननो जन जन्मादिः
भीमो भीमपराक्रमः ।। १०१

आधारनिलयो धाता
पुष्पहासः प्रजागरः ।
ऊर्ध्वगः सत्पथाचारः
प्राणदः प्रणवः पणः ।। १०२

प्रमाणं प्राण निलयः
प्राणभृत् प्राण जीवनः ।
तत्त्वं तत्त्व विदेकात्मा
जन्ममृत्यु जरातिगः ।। १०३

भूर्भुवः स्वस्तरुस्तारः
सविता प्रपितामहः ।
यज्ञो यज्ञपतिर्यज्वा
यज्ञांगो यज्ञवाहनः ।। १०४

यज्ञभृत् यज्ञकृत् यज्ञी
यज्ञभुक् यज्ञसाधनः ।
यज्ञान्तकृत् यज्ञ गुह्यं
अन्न मन्नाद एवच ।। १०५

आत्मयोनिः स्वयं जातो
वैखानः सामगायनः ।
देवकीनंदनः स्त्रष्टा
क्षितीशः पापनाशनः ।। १०६

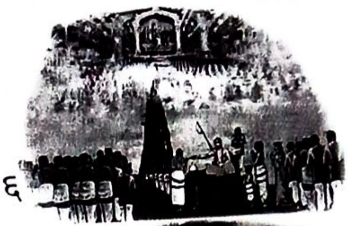

शंखभृन् नंदकी चक्री
शार्ङ्गधन्वा गदाधरः ।
रथांगपाणि रक्षोभ्यः
सर्वप्रहरणायुधः ।। १०७

श्री सर्वप्रहरणायुध ओं नम इति

वनमाली गदी शार्ङ्गी
शंखी चक्री च नंदकी ।
श्रीमान्नारायणो विष्णुः
वासुदेवोऽभिरक्षतु ।। १०८

(श्लोक १०७,१०८ को दो बार पठन करना चाहीए)

उत्तर पीठिका

इतीदं कीर्तनीयस्य
केशवस्य महात्मनः ।
नाम्नां सहस्रं दिव्यानां
अशेषेण प्रकीर्तितम् ।। १

य इदं शृणुयान् नित्यं
यश्चापि परिकीर्तयेत् ।
नाशुभं प्राप्नुयात् किंचित्
सोऽमुत्रेह च मानवः ।। २

वेदांतगो ब्राह्मणस्स्यात्
क्षत्रियो विजयी भवेत् ।
वैश्यो धनसमृद्धः स्यात्
शूद्रस्सुख मवाप्नुयात् ।। ३

धर्मार्थी प्राप्नुयाद्धर्मं
अर्थार्थी चार्थ माप्नुयात् ।
कामा नवाप्नुयात् कामी
प्रजार्थी चाप्नुयात् प्रजाः ।। ४

भक्तिमान् यः सदोत्थाय
शुचि स्तद्गत मानसः ।
सहस्रं वासुदेवस्य
नाम्ना मेतत् प्रकीर्तयेत् ।। ५

यशः प्राप्नोति विपुलं
याति प्राधान्यमेव च ।
अचलां श्रियमाप्नोति
श्रेयः प्राप्नोत्यनुत्तमम् ।। ६

न भयं क्वचिदाप्नोति
वीर्यं तेजश्च विंदति ।
भवत्यरोगो द्युतिमान्
बलरूप गुणान्वितः ।। ७

रोगार्तो मुच्यते रोगात्
बद्धो मुच्येत बंधनात् ।
भयान्मुच्येत भीतस्तु
मुच्येतापन्न आपदः ।। ८

दुर्गाण्यतितरत्याशु
पुरुषः पुरुषोत्तमम् ।
स्तुवन्नामसहस्रेण
नित्यं भक्ति समन्वितः ।। ९

वासुदेवाश्रयो मर्त्यो
वासुदेव परायणः ।
सर्वपाप विशुद्धात्मा
याति ब्रह्म सनातनम् ।। १०

न वासुदेवभक्तानां
अशुभं विद्यते क्वचित् ।
जन्म मृत्यु जरा व्याधि
भयं नैवोप जायते ।। ११

इमं स्तव मधीयानः
श्रद्धाभक्ति समन्वितः ।
युज्येतात्म सुखक्षांति
श्रीधृति स्मृति कीर्तिभिः ।।१२

न क्रोधो न च मात्सर्यं
न लोभो नाऽशुभा मतिः ।
भवंति कृत पुण्यानां
भक्तानां पुरुषोत्तमे ।। १३

द्यौस्सचंद्रार्क नक्षत्रं
खं दिशो भूर्महोदधिः ।
वासुदेवस्य वीर्येण
विधृतानि महात्मनः ।। १४

ससुरासुर गन्धर्वम्
सयक्षोरग राक्षसम् ।
जगद्वशे वर्ततेदं
कृष्णस्य सचराचरम् ।। १५

इंद्रियाणि मनोबुद्धिः
सत्त्वं तेजो बलं धृतिः ।
वासुदेवात्मकान्याहुः
क्षेत्रं क्षेत्रज्ञ एव च ।। १६

सर्वागमानामाचारः
प्रथमं परिकल्पितः ।
आचार प्रभवो धर्मो
धर्मस्य प्रभुरच्युतः ।। १७

ऋषयः पितरो देवाः
महाभूतानि धातवः ।
जंगमाजंगमं चेदं
जगन्नारायणोद्‌भवम् ।।   १८

योगो ज्ञानं तथा सांख्यं
विद्याः शिल्पादि कर्म च ।
वेदाः शास्त्राणि विज्ञानं
एतत् सर्वं जनार्दनात् ।। १९

एको विष्णुर्महद्‌भूतम्
पृथग्भूतान्यनेकशः ।
त्रीन् लोकान् व्याप्य भूतात्मा
भुंक्ते विश्वभुगव्ययः ।।   २०

इमं स्तवं भगवतो
विष्णोर्व्यासेन कीर्तितम् ।
पठेद्य इच्छेत् पुरुषः
श्रेयः प्राप्तुं सुखानि च।। २१

विश्वेश्वर मजं देवं
जगतः प्रभुमव्ययम् ।
भजंति ये पुष्कराक्षं
न ते यांति पराभवम् ।। २२

न ते यांति पराभवम् ओम् नम इति ।

अर्जुन उवाच

पद्मपत्र! विशालाक्ष! पद्मनाभ सुरोत्तम !
भक्ताना मनुरक्तानां त्राता भव जनार्दन! ।। २३

श्री भगवानुवाच

यो मां नाम सहस्रेण स्तोतु मिच्छति पांडव ।
सोऽह मेकेन श्लोकेन स्तुत एव न संशयः ।।२४

स्तुत एव न संशय ओम् नम इति

व्यास उवाच

वासनाद्वासुदेवस्य वासितं ते जगत् त्रयम्।
सर्वभूत निवासोऽसि वासुदेव नमोऽस्तु ते ।।   २५

श्रीवासुदेव नमोस्तु त ओं नम इति।

पार्वत्युवाच

केनोपायेन लघुना विष्णोर्नाम सहस्रकम् ।
पठ्यते पंडितैर्नित्यं श्रोतु मिच्छाम्यहं प्रभो ।।२६

ईश्वर उवाच

श्रीराम राम रामेति रमे रामे मनोरमे ।
सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने।। २७

श्रीरामनाम वरानने ओम् नम इति

ब्रह्मोवाच

नमोऽस्त्वनताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षि शिरोरु बाहवे ।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटी युगधारिणे नमः ।।

श्री सहस्त्र कोटि युगधारिण ओम् नम इति

संजय उवाच

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
तत्र श्रीः विजयो भूतिः ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।२९

श्री भगवानुवाच

अनन्याश्चिंतयंतो मां ये जनाः पर्युपासते ।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ।।३०
परीत्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ।।   ३१
आर्ता विषण्णाः शिथिलाश्च भीताः घोरेषु च व्याधिषु वर्तमानाः ।
संकीर्त्य नारायण शब्दमात्रं विमुक्तदुःखाः सुखिनो भवंति ।।   ३२
यदक्षर पदभ्रष्टं मत्राहीनं तु यद्‌भवेत् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव! नारायण! नमोऽस्तु ते ।। ३३
कायेन वाचा मनसेंद्रियैर्वा बुद्‌ध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात् ।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि ।।   ३४

श्रीमन्नारायणायेति समर्पयामि

सर्वं श्रीकृष्णार्पणं अस्तु

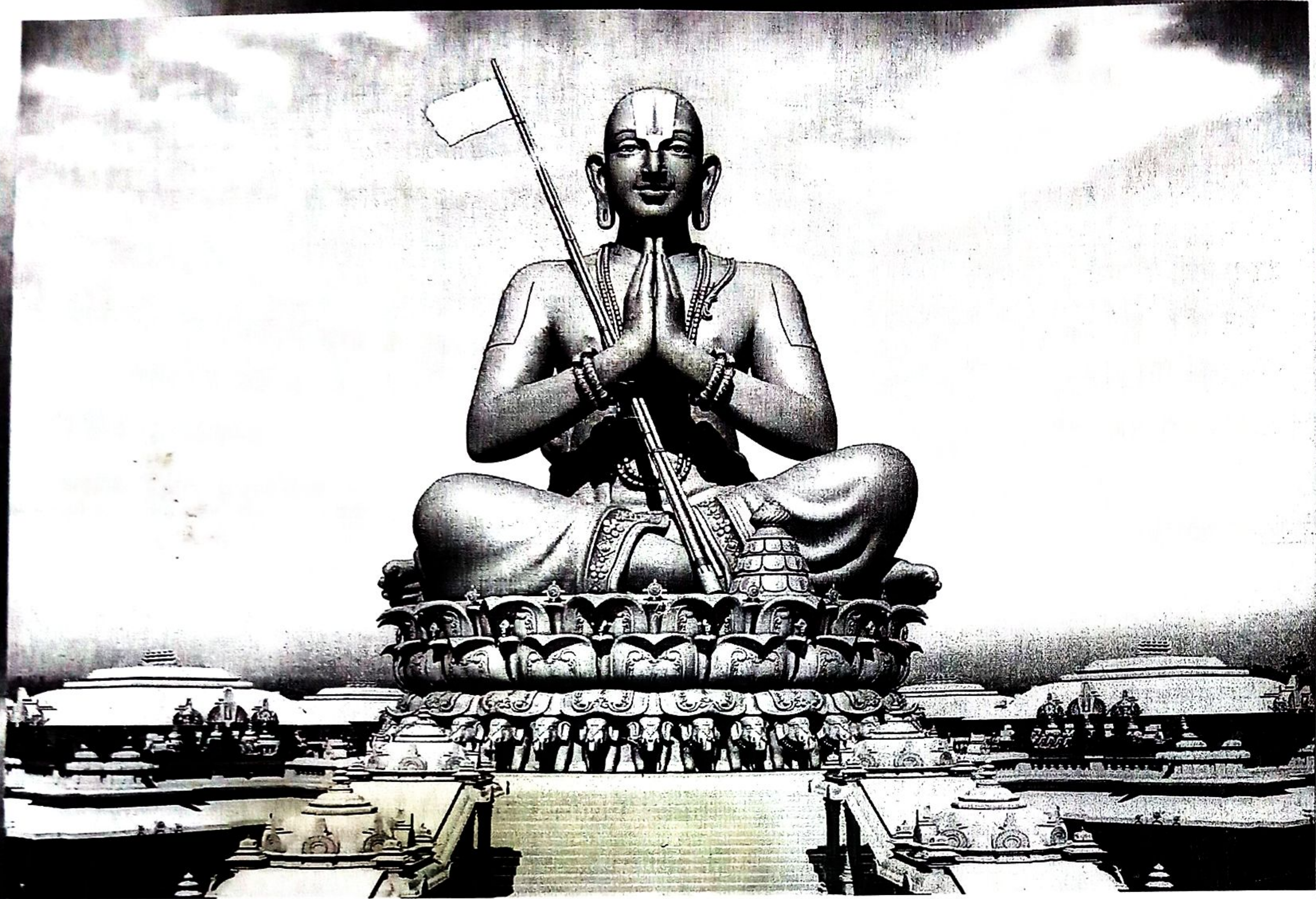

Andhra Bank

A/c Name	:	Sri Ramanuja Sahasrabdi
A/c Number	:	209710100000007
IFSC Code	:	ANDB0002097
Branch	:	Andhra Bank, JIVA Campus

AXIS Bank

A/c Name	:	Sri Ramanuja Sahasrabdi
A/c Number	:	914010046595367
IFSC Code	:	UTIB0000867
Branch	:	AXIS Bank, Shamshabad

+91 9553549971, +91 9553549972
E-mail : contact@statueofequality.org,
www.statueofequality.org